ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 382-384

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में लोकमंगल–भावना

डॉ0 राम अधार सिंह यादव Email : yramadhar64@gmail.com

Received- 28.11.2020, Revised- 01.12.2020, Accepted - 04.12.2020

सारांश– ***मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के प्रकांड विद्वान कवि हैं। मैथिलीशरण गुप्त एक उदार वैश्णव भक्त हैं और राम में उनकी अनन्य भक्ति है यदि राम है तो सब है। और यदि वह राम ईश्वर ना होकर केवल मानव है, तो उनकी आस्था उस मानव राम से भिन्न और किसी में नहीं है। तात्पर्य यह है कि राम को ईश्वर कहिए या मानव वही मात्र उनके आराध्य हैं और उनकी कर्म ही आर्य जाति के धर्म है इसी के प्रतिष्ठान के लिए उनका अवतार हुआ है भली भांति जानते हैं कि वेद आर्य संस्कृति के आधार पर हैं तथा यज्ञ उनके प्रमुख साधन राम की वाणी इसी सत्य का उद्घोष करती है– उच्चारित होती चले वेद की वाणी, गूंजे गिरि कानन सिंधु पार कल्याणी, अंबर से पावन होम धूम लहराए। ऐसी कामना करते हुए वैदिक संस्कृति की उद्घोषणा करते हैं।***

कुंजीभूत शब्द–प्रकांड विद्वान, आस्था, आराध्य, आर्य जाति, आर्य संस्कृति।

एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, एस0 एम0 कालेज चन्दौसी, सम्भल (उ0प्र0) भारत

अनुरूपी लेखक

श्री मैथिलीशरण गुप्त अपने समय के अधिक भाव प्रवणता और काव्य प्रतिभा में अग्रणीय थे। "द्विवेदी जी की इतिवृत्तात्मक कविता का विरोध होने पर इन्होंने काव्य क्षेत्र में अभिव्यंजना की नवीन प्रणाली और मुक्तक गीतों की सृष्टि की इस क्षेत्र में इन पर रविन्द्रनाथ ठाकुर का प्रभाव पड़ा था, ठाकुर महोदय की अभिव्यक्ति पूर्ण रहस्यवादी रचनाओं से आकशित होकर गुप्त जी ने इनका भी हिंदी में शुद्ध पाठ किया इस कार्य में सफलता मिली और जनता ने इस नवीन प्रयास का हृदय से स्वागत किया।"[1]

काव्य के क्षेत्र में आचार्य द्विवेदी जी के आदर्श और उपदेश तथा स्नेहमयी प्रोत्साहन का सबसे बड़ा प्रभाव मैथिलीशरण गुप्त का निर्माण था। गुप्त जी की सारी कविता उनकी जीवन व्यापी साधना द्विवेदी जी के आदर्शों पर लंबित है इस साधना से हिन्दी साहित्य लोक मंगल काव्य श्री मैथिलीशरण गुप्त ने श्री आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की बातों पर अपनी काव्य साधना को उठाना खड़ी बोली के विकास के प्रति द्विवेदी जी पूर्ण आश्वस्त थे। इसलिए उन्होनें बड़ी निर्भीक वाणी में संस्कृत में लिखा। "ब्रज भाषा की कविता के महत्व के जी तलाशने का समय गया अब फिर नहीं आने का। ब्रज की बोली में कविता ना करने या उस बोली को ना जानने वाले चाहे लंगूर बन जाए, इससे बोलचाल की भाषा की कविता का प्रभाव बंद ना होगा।"[2]

"बाबू मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के प्रतिनिधि कवि हैं यद्यपि उन्होने परवर्ती काव्य की शैलियां भी अपनाएं उनकी कविता में द्विवेदी युग के अन्य कवियों की भांति इतिवृत्तात्मकता प्रधानता है परन्तु जहां अन्य कवि छोटी–छोटी मुक्तक कविताओं तक ही रह गए वहां उन्होंने मुक्तक के अतिरिक्त खंडकाव्य महाकाव्य की भी रचना की। रंग में भंग, गुरूकुल जयद्रथ वध, विकट भट पंचवटी बैतालिक, साकेत, द्वापर, यशोधरा, तिलोत्मता, नहुष लगभग एक दर्जन से अधिक कथा प्रधान काव्य से उन्होंने हिंदी काव्य भंडार को अलंकृत किया। इन काव्यों को विषय हिंदू जातीय वीर एवं पौराणिक पुरूष या अवतार हैं। इन सब कथाओं में गुप्त जी मनुष्य के परिचित सुख–दुख का वातावरण लेकर उपस्थित होते हैं। लगभग सभी में करूणामूलक मानव प्रेम विश्व एवं बलिदान का संकेत है।

श्री मैथिलीशरण गुप्त समाज के सभी महत्वपूर्ण अंगों पर अपनी दृष्टि रखते हैं। इसलिए आधुनिक सामाजिक अधोगति का चित्र उन्हें भी आहत करता है और हिंदू समाज में ब्राहमणों से विशेष प्रार्थना करते हैं– तुम हो कर भीकुशपाणि विश्व के शासक थे। बल विक्रम बुद्धि विकास त्रास दुखनाशक थे। सब बातों में अगुआ ही पूछे जाते हैं।[3]

भक्ति भावना विनय शील व्यक्तित्व की एक प्रमुख विशेषता कही जाती है गुप्तजी प्रकृति भक्ति भाव से आप और थे वैष्णव भावना उन्हें पैतृक संस्कारों के रूप में मिली थी उनका परिवार सुसंस्कृत होने के साथ–साथ युग की नूतन किरणों से भी आलोकित है तथापि गुप्तजी में अराधना आत्मिक भाव अधिक था, प्रभु की आराधना के मूल स्वरूप में आपस में कोई अंतर नहीं आता। बाबू मैथिलीशरण गुप्त प्रभु–द्वार पर लगी भीड़ से परेशान हैं आखिर प्रभु तक कैसे पहुंचे अतः इस परिस्थिति की सूचना वे अपने आराध्य को देन के लिए विवश है–

तेरे घर के द्वार बहुत है किस से होकर आऊँगा मैं सब द्वारों पर भीड़ बडी है, कैसे बीत रहा हूँ मैं.....[4]

डॉ उदय भान सिंह का

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

अभिमत है कि धार्मिक कविता के क्षेत्र में उस युग के कवियों की मनोवृति की नवीनता अनेक रूपों में व्यक्त हुई पौराणिक अवतारवाद से प्रभावित भक्ति काल में राम और कृष्ण को ईश्वर के रूप में चित्रित किया था बींसवी सदी के विज्ञान युग में उनके मानवीय करण की प्रकिया सर्वथा स्वाभाविक भी थी, उन्होंने प्रिय प्रवास और साकेत तथा पंचवटी में कृष्ण और राम का मानव रूप में चरित्र चित्रण करने वाले अयोध्या सिंह उपाध्याय मैथिलीशरण गुप्त ने अपना नामांकन शुरू किया निवेदन है कि कृश्ण और राम करना है महापुरूष के रूप में चित्रित करने का कारण यह है। आधुनिक विज्ञान उन्हें ईश्वर स्वीकार करने के लिए प्रस्तुत नहीं था और उन कवियों को साहित्य जगत को ऐसी वस्तु देनी थी, जो अवतारवादियों तथा अनअवतारवादियों को समान रूप से रोचक और उपयोगी हो वाल्मीकी और व्यास की भांति रामाकृष्ण को महापुरूष के रूप में प्रतिष्ठित करके द्विवेदी युग में हिंदी जनता के सामने अनुकरणीय चरित्र का आदर्श उपस्थित किया।[5]

गुप्त जी की राष्ट्रीय कृति की अपेक्षा जातीय कृति अधिक है इसमें गुप्त जी के रक्तदाता हिंदू संस्कार बोल रहे हैं–

हिंदू धन्य तुम्हारी सृष्टि, तद्पि हाय तुम अस्त–व्यस्त इसलिए यह रूदन समस्त।[6] उन्होंने सभी धर्मों को हिंदुत्व के अंतर्गत समझ लिया संस्कृति के प्रति उनका दृष्टिकोण समन्वयक है।

विष्णु प्रिया काव्य में चैतन्य महाप्रभु कथा उनकी ग्रहणी विष्णु प्रिया का चरित्र निरूपित किया है विष्णुप्रिया में मध्य युग की नारी का संवेदनात्मक गौरव कालमुखी करना कवि का लक्ष्य रहा है, जो पति द्वारा परित्यक्त हुई जीवन की यंत्रणा उसने निरालंब होकर स्वयं/निजी और स्वजनों की सेवा की उन्होनें नारी के व्यक्तित्व को पुनः प्रतिष्ठित किया और उसकी उच्च सरिता को गौरवान्वित किया। वे कथावस्तु को वर्णनात्मक बनाते हैं। विष्णु प्रिया के चरित्र को व्यवस्था में पद्धति से उभारते हैं। भारतीय संस्कृति में भारतीय नारी की आश्रम धर्म के अनुरूप जो आदर्श है विष्णु प्रिया उसकी मूर्ति प्रतिमा है चैतन्य ने अपनी प्रेम साधना के लिए यह धर्म का परित्याग किया पर विष्णु प्रिया ने अपनी प्रेम साधना का उन्नयन धर्म के पालन में किया यही उसका लोग धर्म था कवि ने वाणी दी है–

नाथ साधु हो तुम मैं भी हूं साध्वी कुल कुलबाला। भूले आश्रम धर्म आज तुम काट गए हो स्वंय कुल–द्रुम।
पर है मेरा धर्म व्यर्थ यदि तुम्हें स्वकर्म ना साला।।[7]

महाप्रभु चैतन्य ने अपनी मां को संदेश भेजा –

मां तुम्हारी सेवा छोड़धर्म भूल अपना सन्यासी हुआ मैं मत्त, मुझको क्षमा करो।[8]

गुप्तजी भारतीय संस्कृति के शुभ पक्ष को प्रतिश्ठित करने के लिए सचेष्ट रहे है। उसमें उन्हें पूरी सफलता भी मिली है। भारतीय संस्कृति की नारी की चरम अभिव्यक्ति उन्होंने इस प्रकार दी है–

नारी लेने नहीं लोक में देने आती है
अश्रु शेश रखकर वह उनसे प्रभु पद धो जाती है।।
पर देन में विनय ना होकर जहां गर्व होता हैं।
तपस्त्याग का पर्व हमारा वहीं स्वर्ग होता है।।[9]

साकेत में मैथिलीशरण गुप्त ने नर के साथ नारी भी शिक्षित की भावना जगाई है वे कहते हैं आदर्श समाज वही कहा जा सकता है जहां नारी स्वयं आगे बढ़ता समाज वही कहा जा सकता है जहां नारी स्वंय आगे प्रजा का भी ज्ञानवान होना अति आवश्यक है। वह कहते हैं कि साकेत के पौर जनता तक शिक्षित थे राज परिवार का तो कहना ही क्या–

स्वास्थ्य शिक्षित शिष्ट उद्यमी सभी, वाह्य योगी, आंतरिक योगी सभी।[10]

उर्मिला चित्रकला में अत्यंत निपुण उसने अभिषेक का काल्पनिक चित्र बनाकर लक्ष्मण को क्षण मात्र में आश्चर्यचकित कर दिया–चित्र भी था चित्र और विचित्र भी। रह गएचित्रस्थ से सौमित्र भी।।[11]

अपने उपवनमें वह पुरवाला शाला खुलवा कर शिक्षा का बनने का भी विचार प्रकट करती है।

राम और सीता रामअवतार और उसकी माया की शक्ति बनकर अवतरित हुए हैं। दोनों की दृष्टियों में ही शक्ति का नित्य विकास होता है। गुप्त जी के राम कहते हैं– हम को लेकर ही अतिवृष्टि की क्रीड़ा । आनंदमई नित फसल की पीड़ा। ईश्वर के अंशरूप में रात का अवतारी रूप उन्होंन केवल दैवी शक्ति होने के नाते ही मान्य नहीं है बल्कि उसमें मानवता के आदर्शों की अभिव्यक्ति होने को कारण उसमें विशेष ग्रहण योग्य है–

किसलिए यह खेल प्रभु ने है किया।
मनुज बनकर मानवी का पयपिया।।
भक्तवत्सलता इसी का नाम है।
और वह लोकेश लीला धाम है।[12]

मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं अपनी मानत्व में ईश्वर को लय करने वाले मर्यादा पुरूषोत्तम आदर्श राम है। समय–समय पर उसमें समस्त मानवीय प्रकृति के अनुसार प्रकाश में आई हैं। दूसरों के दुख को देखकर उनका द्रवणशील हदय शीघ्र ही व्यग्र होता है और वे अपने संबंध पर बिना कोई ध्यान दिए उसकी सहायता के लिए उठ खड़े हो जाते हैं। जीवन की विषम परिस्थितियां उन्हें विचलित नहीं कर पाती और बड़े धैर्य पूर्वक सामना करते हैं–

राम–भाव अभिषेक समय जैसा रहा। वन जाते भी सहज सौम्यवैसारहा।
वर्षा हो या ग्रीष्म सिंधु रहता वही, मर्यादा की सदा साक्षिणी है मही।[13] साकेत की प्रजा को उन्होने आश्वासन दिया–

प्रजा नहीं तुम प्रकृति हमारी बन गए

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

दोनों के सुख–दुख एक में सन गए।
बंधु विदा दो उसी भाव से तुम हमें
वन के कांटे बनेंकीर्णकुंकुमहमें करू
पापसंहार पुण्य–विस्तार मैं, भरूं भद्रता
भरूं विघ्न भय बार [14]

निम्नलिखित पंक्तियों में भी लोकहितवादी विचारों की अभिव्यक्ति हुई है–

चाहे जो अपने लिए वही और के अर्थ केवल स्वार्थ विचारना है अत्यंत अर्थ।[15],

उन्होंने राम के चरित्र को ईश्वरीय अवतार के साथ–साथ मानवीय सद्गुणों से भी अभी प्रेरित बताया । जब राम का अभिषेक हो रहा था तब भी राम का चरित्र वही मर्यादा भी वही है। चाहे वह किसी भी काल में हो। एक जैसा ही रहता है, में मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं कि जब वे साकेत को छोड़कर वन की ओर गमन कर रहे थे, तो प्रजा के सुख दुख के सहकारी हो गए उन्होंने कहा विदा दो तुम उसी भाव से, तॉकि मैं सारे संसार का कल्याण कर सकूँ, पुण्य का विस्तार कर सकूँ। पापों का संहार कर सकूँ। सारे संसार के विघ्नों को काट सकूँ, ऐसी मेरी कामना है। हे! साकेत के वासियों तुम मुझे आशीर्वाद दो कि वन के सारे कांटे मेरे मस्तिष्क का तिलक बन जायें।

शरणागत भाव वाली संस्कृति भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पक्ष शरण में आए हुए का त्याग हमारे यहां आप माना जाता है, तुलसीदास ने भी कहा है–

शरणागत कहुंजेत जहिंनिज अनहित अनुमान।
ये नर पामर पाप तिनहिं विलोकत हानि।।

मानव पात्रों में राम को साकेत और मानस में भी साक्षात धर्म है, जो सगुण रूप में धर्म की प्रतिष्ठा होते हुए मानव रूप में अवतरित हुए हैं। साकेत में भी वे अखिलेश के अवतार हैं, किन्तु उनके कार्य सर्वथा मानवीय कार्य हैं। ''हमारी सबसे बड़ी समस्या जीवन है और उससे परे अध्यात्म या धर्म उस युग में कोई अर्थ नहीं रखता साकेत की धार्मिक पृष्ठभूमि का यही स्वरूप है उसमें भुक्ति और मुक्ति। भावुकता और बुद्धि का सामंजस्य है। भक्ति आकर साकेत में भावुकता बन गई है। यह समय का तकाजा है।''[16]

निष्कर्ष – मैथिलीशरण गुप्त भक्ति–भावना विनय शील व्यक्तित्व की एक प्रमुख विशेषता कही जाती है। गुप्त जी प्रकृति भक्ति भाव से आपूरित थे। मैथिलीशरण अपने महाकाव्यों के लिए मुख्य पात्र के रूप में ऐसे ही महामना चरित्रों का चयन करते हैं, उनके सभी प्रमुख पात्र स्वार्थ ही नहीं पदार्थ और परमार्थ की भी साधना करते हैं। जीवन वृत्त द्वारा स्वार्थपरक मूल्यों की नहीं वरन् परार्थपरक जीवन मूल्यों की उच्चतर मानवीय भावनाओं की प्रतिष्ठा होती है। तात्पर्य यह है कि गुप्त जी के महाकाव्यों की प्रतिश्ठा होती है। तात्पर्य यह है कि गुप्त जी के महाकाव्यों में असत्य का तिरस्कार कर सत्य की प्रतिष्ठा, स्वार्थ की अपेक्षा परमार्थ की श्रेष्ठता का महा संदेश है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. जन्म भूमि, मार्च 1903.
2. डॉक्टर भटनागर– मैथिलीशरण गुप्त पृष्ठ–33.
3. सरस्वती खंड– 1908ई0 पृष्ठ 204.
4. सरस्वती खंड–19 संख्या–5 सन् 1918.
5. डॉ0 भटनागर मैथिलीशरण गुप्त– पृष्ठ–33.
6. हिन्दू तृतीय वृत्ति पृष्ठ 113.
7, 8. गुप्त विष्णु प्रिया पृष्ठ– 117.
9. 10, 11, 12, 13, 14, 15– मैथिलीशरण गुप्त साकेत पंचम सर्ग।
16. डॉ0 नगेन्द्र– साकेतः एक अध्ययन– पृष्ठ– 157.

*****